विषयानुक्रमणिका—

क्र.	विषय	पृष्ट सख्या
१	यथार्थ दृष्टि की आवश्यकता	३
२	सम्यक्त्व के पोषक तत्त्व	६
३	सुदृष्ट परमार्थ सेवन	१४
४	पतितो और कुदर्शनियो से बचना	१५
५	परमार्थ की छाया में	१६
६	सम्यग् दृष्टि के कारण	१८
७	मोक्ष की मान्यता	१६
८	अनेकान्त	२०
६	मोक्ष के साधन	२१
१०	तत्वज्ञान की वैज्ञानिकता	२२
११	आस्तिकता	२४
१२	सम्यग्दृष्टि कौन	२५
१३	परीक्षक या अध विश्वासी	२७
१४	विश्वास की व्यापकता	२८
१५	आराध्य की परीक्षा	२६
१६	विना त्याग के भी सम्यक्त्व ?	३२
१७	सम्यग्दृष्टि का आयु वध	३३
१८	तीव्र कषायी भी सम्यग्दृष्टि ?	३५
१६	सम्यगदृष्टि अवन्धक ?	३६
२०	तत्त्व श्रद्धा क्यों	४०
२१	अटल श्रद्धा—	४२
२२	खुद को परखो	४३
२३	महान् आधार स्तम्भ-	४५
२४	निगोद से खींचकर लानेवाला	४७
२५	मिथ्यात्व की भयकरता	४७

क्र	विषय	पृष्ठ संख्या
२६	मिथ्यात्व के मोहक रूप	४८
२७	मार्ग एक या अनेक ?	४९
२८	सर्वज्ञता पर श्रद्धा	५८
२९	देश सम्यक्त्व क्यों नहीं	६०
३०	विश्व धर्म	६१
३१	आस्था का महत्व	६७
३२	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व की अस्थिरता	६९
३३	खतरे के स्थान	७१
३४	दूषण–१ शका	७३
	२ काक्षा	८०
	३ विचिकित्सा	८२
	४ परपाषडी प्रशंसा	८४
	५ परपाषड परिचय	९२
३५	दर्शन भ्रष्टों की भयानकता	९७
३६	मिथ्यात्व	१०२
३७	अनादि अपर्यवसित मिथ्यात्व	१०५
३८	अनादि सपर्यवसित मिथ्यात्व	१०५
३९	सादि सपर्यवसित मिथ्यात्व	१०६
४०	अधर्म को धर्म मानना	१०८
४१	धर्म को अधर्म मानना	११३
४२	कुमार्ग को सुमार्ग समझना	११६
४३	सुमार्ग को कुमार्ग मानना	११९
४४	अजीव को जीव मानना	१२३
४५	जीव को अजीव मानना	१२८
४६	असाधु को साधु मानना	१३३
४७	साधु को असाधु मानना	१४२
४८	अन्यमत का साधु भी ?	१४४
४९	वेश की उपयोगिता	१४६

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
५०	अन्य आराधक क्यों नहीं ?	१४८
५१	साधु और जन सेवा	१५१
५२	अमुक्त को मुक्त मानना	१५४
५३	मुक्त को अमुक्त मानना	१५८
५४	आभिग्रहिक मिथ्यात्व	१६३
५५	अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व	१६६
५६	वेश की प्रधानता नहीं	१६८
५७	धर्म, मनुष्य की आवश्यकता ?	१६९
५८	समन्वय वृत्ति	१६९
५९	सभी समान नहीं	१७०
६०	आभिनिवेशिक मिथ्यात्व	१७३
६१	धर्म में सौदा नहीं	१७८
६२	सांशयिक मिथ्यात्व	१७९
६३	आगमिक सत्यता	१७९
६४	भौतिक विज्ञान की क्षुद्रता	१८१
६५	अनाभोगिक मिथ्यात्व	१८३
६६	तटस्थता नहीं	१८५
६७	लौकिक मिथ्यात्व	१८६
६८	देव विषयक लौकिक मिथ्यात्व	,,
६९	लौकिक कार्य के लिए	,,
७०	कितनी बडी भूल	१८७
७१	गुरु विषयक लौकिक मिथ्यात्व	१८९
७२	धर्मगत लौकिक मिथ्यात्व	१९०
७३	बालक ने हजारों को छला	१९३
७४	लोकोत्तर मिथ्यात्व	१९४
७५	लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व	१९४
७६	लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व	१९७

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
७७	लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्व	१९७
७८	कुप्रावचनिक मिथ्यात्व	२००
७९	न्युन-करण मिथ्यात्व	२०१
८०	अधिक-करण मिथ्यात्व	२०२
८१	विपरीत मिथ्यात्व	२०२
८२	अक्रिया मिथ्यात्व	२०३
८३	अज्ञान मिथ्यात्व	२१३
८४	अविनय मिथ्यात्व	२१५
८५	आशातना मिथ्यात्व	२१६
८६	मिथ्याश्रुत का पठन-पाठन	,,
८७	सम्यक्त्व परम दुर्लभ है	२२०
८८	सम्यग्दर्शन का महत्व	२२४
८९	विज्ञान भूमिका की दशा	२२७
९०	श्रद्धालुओ का परम आधार	२२९
९१	तत्त्वार्थ श्रद्धा	२३४
९२	पहले से चौथा कब ?	२३५
९३	सत्रह पापो के सद्भाव में भी	२३६
९४	ज्ञान भी अज्ञान	२३७
९५	इतना महत्व क्यों ?	,,
९६	अपरिवर्त्तनीय	२३९
९७	सम्यग्दृष्टि का निर्णय	२४१
९८	स्व-पर विवेक	२४५
९९	सजातीय विजातीय	२४८
१००	आगमो में आत्म-लक्षी विधान	२५८
१०१	आत्मदर्शन और सम्यग्दर्शन	२६७
१०२	केवलज्ञान के समान	२७९
१०३	इस अनमोल रत्न की रक्षा करो	२८४
१०४	सम्यक्त्व महिमा	२८६